International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 2, Mar.-Apr, 2024, Impact Factor: 8.376

दक्षिण पश्चिम बुन्देलखण्ड क्षेत्र में क्रांति का प्रसार

डॉ. सावित्री सिंह परिहार[1], श्रीमती प्रभा चौहान[2]

[1]शोध निर्देशिकाः–
[2]शोध कर्त्ताः–

सन् 1857 का संग्राम वास्तव में अंग्रेजों की अत्याचारी, दमनकारी, घोर आर्थिक शोषण, सामाजिक रीति रिवाजों और धार्मिक परम्पराओं में गंभीर हस्तक्षेप से उपजी विद्रोह की भावना का परिणाम था। डलहौजी की हड़पनीति ने राजाओं की क्रोधाग्नि को भड़का दिया था, लगान मुक्त पट्टो के अधिग्रहण ने भूमिस्वामियों को शत्रु बना दिया, कृषि की अवहेलना ने पैदावार चौपट कर दी, घरेलू उद्योग धंधे तबाह हो गये। सेना में शक्ति चेतना जाग उठी तथा चर्बीयुक्त कारतूसों ने असंतोष की ज्वाला को भड़का दिया। इससे विद्रोह की सुप्त भावना जाग्रत हो गयी और सतलज से लेकर नर्मदा तक का सारा उत्तरी भारत व्रिदोह की आग से जल उठा।

मेरठ में 10 मई 1857 को क्रांति शुरू हो गयी और अंग्रेजों के सारे षड़यंत्रों को धता बताते हुये हिन्दु, मुसलमान, ब्राह्मण, ठाकुर, दलित सब कन्धे से कन्धा मिलाकर मातृभूमि को दासता से मुक्त करने के लिये एक साथ खड़े हो गये। उन्होंने इस विश्वास के साथ खून बहाया कि सशस्त्र क्रांति से भारत की परतंत्रता की बेडियाँ कट जायेगी। उन्होंने बहादुर शाह को देश का शासक घोषित किया। बहादुर शाह ने देशवासियों को आह्वान किया, ''भारत के हिन्दुओं और मुसलमानों! उठो! भाइयो उठो! परमात्मा के सभी वरदानों में स्वराज ही उसका दिया सर्वोत्तम वरदान है।''

बुन्देली माटी में जन्मी पली निर्भीकता एवं स्वाभिमान जैसे दुर्लभ गुणों से परिपूर्ण यहाँ की जनता ने कभी भी विदेशियों के अन्याय को सहन नहीं किया। चाहे सामने वाला दुश्मन कितना ही सबल क्यों न रहा हो। बुन्देली इतिहास के पन्नों को पलटकर अगर देखा जाये तो मुगलों एवं अंग्रेजों के सबल साम्राज्य के खिलाफ संग्राम छेड़ने में यहाँ की जनता ने कभी अपने कदम पीछे नहीं किये। दोनों समय में जनता में उत्साह रहा एवं उनको हमेशा नेतृत्व की तलाश रही। नेतृत्व मिलते ही जनता ने उत्साहपूर्वक सैनिक रूप धारण कर विदेशियों को अपने जौहर दिखाये।

मुख्य बिन्दुः– स्वतंत्रता संगाम, विद्रोह, क्रांति

दक्षिण पश्चिम बुन्देलखण्ड में 1857 ई. की क्रान्ति का मुख्य केन्द्र सागर बना हुआ था। यहां पर क्रान्ति का नेतृत्व करने वाले अग्रिण्य नेताओं में बानपुर के राजा मर्दनसिंह तथा शाहगढ़ के राजा बरवतबली थे।

सागर में क्रांति की पृष्ट भूमि

1842 के बुन्देला विद्रोह के दमन के बाद सागर अशांत स्थिति में था। सागर, दमोह, नरसिंहपुर, चावरपाठा, तेन्दूखेड़ा, हीरापुर वे स्थान थे जहाँ ठाकुरों और मालगुजारों ने पद्रह साल पहले अंग्रेजों की अधीनता और उन पर निर्भरता से इनकार कर दिया था।

बुन्देला विद्रोह का दमन करने के बाद ब्रिटिश शासन ने न्यायिक और राजस्व प्रशासन में कई परिवर्तन किए। इन परिवर्तनों से लोगों का आक्रोश और अधिक बढ़ गया जो हमें बुन्देला विद्रोह के 15 वर्ष बाद हुई 1857 की क्रांति में देखने को मिला यह क्रांति अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के लिये एक विशेष सामुहिक प्रयास था। सागर जिले में बुन्देला विद्रोह के एक महत्वपूर्ण परिणाम में कृषि में मंदी आयी। सन् 1845 में यह जरूरी समझा गया कि पूरे जिले में राजस्व में दस प्रतिशत की सामान्य कमी की जाए। सन् 1857 की क्रांति से पहले इस जिले में लगातार कई वर्षों से फसल खराब हो रही थी। गेहूँ की फसले 1854, 1855 औार 1856 में खराब

हो गयी थी। अनाज की कमी, ऊँची कीमतों, असहनीय तकलीफों तथा सरकार द्वारा उठाये गये अपर्याप्त और भेदभाव पूर्ण कदमों के कारण ब्रिटिश सरकार की छवि धूमिल हो गयी थी।

सागर में क्रांति

सागर में क्रान्ति होने के लिए तत्कालीन वहीं कारण थे, जो उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में थे।जैसे आटे और शक्कर में हड्डी का चूरा मिले होने की अफवाह और सागर स्थित रेजिमेन्ट के सैनिकों में चर्बीयुक्त करातूस का असंतोष। इस क्रांति के शुरू होने से कम से कम छह माह पहले से इसके संकेत स्पष्ट होने शुरू हो गये थे। मेजर एर्सकाईन ने वर्णन किया कि किस तरह जनवरी 1857 के आस–पास सागर तथा अन्य जिलों में चपातियाँ एक रहस्यमय तरीके से गाँव–गाँव भेजी गयी। यह आने वाली क्रांति का संदेश और चेतावनी थी, ताकि लोग इसके लिये तैयार हो सकें। अप्रैल में बंगाल में रेजीमेंट से उत्तेजक पत्र सागर रेजिमेन्ट पहुँचे, जिनमें आरोप लगाया गया था कि नये ग्रीस लगे कारतूस उनके धर्म को भ्रष्ट करने के लिये बनाये गये है। मई के प्रांरभ में सागर में कहानियाँ चल रही थी कि आटा और शक्कर में सरकार के आदेश से सुअर और गाय का खून तथा हड्डी का चूरा मिलाया गया है, ताकि हिन्दु और मुलसमानों दोनों का धर्म भ्रष्ट हो जाये।

संचार के अपर्याप्त साधनों के बावजूद दिल्ली और मेरठ की घटनाओं की खबरें 17 मई 1857 को सागर पहुँच गयी किन्तु माह के अंत तक कोई घटना नहीं हुई। मेजर एर्सकान ने लिखा कि– ऐसा प्रतीत होता है कि इससे देशी लोगों के बीच कोई बहुत ज्यादा उत्तेजना हुई हो, लेकिन सिपाहियों और शहरी लोगों ने अत्याधिक आंतक की भावना को व्यक्त किया तथा, सभी स्टेशनों पर रहने वाले यूरोपियनों को बहुत खतरा महसूस हुआ। बहरहाल मई 1857 तक कुछ नहीं हुआ। सिर्फ सागर के महाजनों ने तत्काल हुण्डियों विनिमय, आदि में अपना व्यवसाय बंद कर दिया।

आठ जून, 1857 को झांसी में हुये घटनाक्रम की खबर के साथ जिसमें तिहत्तर यूरोपियनों की हत्या कर दी गयी थी, यह भी खबर आयी कि पड़ोसी राज्य बानपुर के राजा मर्दन सिंह ने ललितपुर में एक बड़ी सेना इकट्ठी कर ली है।

जिस का मुख्यालय चंदेरी जिला है। इन खबरों से ''सिपाहियों में काफी उत्तेजना फैली और सागर के पास के ठाकुर और जबलपुर के सिपाही बहुत बेचैन हो गये। ऐसा स्पष्ट लग रहा था कि विद्रोह करने में उनकी रूचि नहीं है, बल्कि उन्हें निहत्थे किये जाने का भय सता रहा था।

नौ जून को मेजर एर्सकाइन ने नागपुर के कमिश्नर मिस्टर प्लाउडेन को लिखे एक पत्र में लिखा कि मुझे इस बात का बहुत डर है कि जब सागर कि सेना को झाँसी के हालात की खबर लगेगी, तो वह विद्रोह कर सागर के खजाने और गोला–बारूद को कब्जे में ले लेगी, और ऐसा होता है तो मैं नहीं समझता कि 52वीं रेजीमेन्ट यहाँ शांत खड़ी रहेगी। यहाँ अनेक यूरोपियन काफी डरे हुए हैं और मैं तो समझता हूँ कि उनमें से कुछ ने अपने परिवारों को सिवनी भेजने का निश्चय कर लिया है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि सभी सिविल ऑफिसर दृढ़ता से जमे रहेंगे और स्वयं की तथा डिप्टी कमिश्नर की जिम्मेदारी मैं लेता हूँ।

बानपुर के राजा मर्दनसिंह की आक्रामक गतिविधियों से घबराकर चंदेरी के डिप्टी कमिश्नर, केप्टन ए.सी.गोर्डन ने मेजर एर्सकाइन को रिपोर्ट दी कि ललितपुर में ठहरी ग्वालियर कंटिनजेन्ट पर भरोसा नहीं किया जाए और यह कि उसे बानपुर के राजा की वफादारी पर शक है, जिसे उसने मदद के लिए बुलाया है, लेकिन उसने अपने समर्थकों के साथ स्टेशन को घेर लिया है। लिहाजा उसने सागर के कमाण्डर, ब्रिगेडियर सेज से सेना भेजने का अनुरोध किया।

इस समय शाहगढ़ के बखतवली, जिनकी रियासत सागर और दमोह जिलों के भीतर थीं, ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई के लिए सैनिकों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया था।यहाँ यह बात भी उल्लेखनीय है कि बानपुर और शाहगढ़ के इन राजाओं ने 1842 में बुंदेला विद्रोह के दमन में अंग्रेजों की सहायता की थी, लेकिन 1857 की क्रांति में इन दोनों ने पाला बदल लिया और क्रांतिकारियों के साथ लड़े। दोनों राजाओं के अंग्रेजों के सहयोगी से विरोधी बनने के पीछे भिन्न–भिन्न कारण थे। 1829 में चंदेरी राज्य की ग्वालियर दरबार के साथ दुश्मनी शुरू होने के बाद उसे शीघ्र ही दबा दिया गया। तब चंदेरी के राजा मुर प्रहलाद के साथ एक

समझौता किया गया, जिसके द्वारा यह निर्णय लिया गया कि चंदेरी राज्य का दो–तिहाई राजस्व ग्वालियर को दिया जाएगा और एक–तिहाई राजा अपने पास रखेगा, लेकिन सिंधिया का इस राज्य पर नियंत्रण जारी रहा। मर्दन सिंह ने साहसपूर्ण नीति का अनुसरण करते हुए एक तिहाई चंदेरी को कब्जे में करके 1830 में बानपुर को इसकी राजधानी बना दिया। राजा मुर प्रहलाद की 1842 में मृत्यु हो गयी और मर्दन सिंह बानपुर की छोटी सी गद्दी पर बैठे, लेकिन उनका सिंहासनारोहण शांतिपूर्ण नहीं रहा, क्योंकि ग्वालियर दरबार चंदरी जिले के भाग के रूप में बानपुर पर दावा कर रहा था। चंदेरी को उन्होंने 1829–30 में जीत लिया था। बहरहाल ग्वालियर के इस दावे को अंग्रेजों का समर्थन नहीं मिला और यह खारिज कर दिया गया।ऐसा प्रतीत होता है कि चूँकि अंग्रेजों ने बानपुर पर ग्वालियर दरबार के दावे का समर्थन नहीं किया, लिहाजा मर्दन सिंह उनके प्रति सहानुभूति रखते थे। व्यापक रूप से फैले विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेजों ने बानपुर के प्रमुख के साथ दोस्ताना संबंध बनाये और मर्दन सिंह ने भी प्रमुख बुंदेला विद्रोहियों की गिरफ्तारी में उनकी सहायता की। इस विद्रोह के एक प्रमुख नेता, मधुकर शाह को उन्हीं के सहयोग से गिरफ्तार किया गया।सन् 1844 में चंदेरी राज्य के सिंधिया के हिस्से को ग्वालियर कंटिनजेन्ट के भुगतान की जमानत के भाग के रूप में ले लिया और एक सुपरिनटेनडेण्ट, जो नये जिले पर प्रशासन करता था, को बानपुर राज्य का फौजदारी कार्यक्षेत्र दे दिया।

यद्यपि, 1842–43 के कठिन समय में मर्दन सिंह ने वफादारी के साथ ब्रिटिश सरकार की मदद की थी, लेकिन 1857 की क्रांति में वह इससे दूर नहीं रह सकें। प्रारंभ में उन्होंने शर्तो तथा क्षेत्रों के लिए बातचीत करते हुए दोहरा खेला–खेला, लेकिन आगे चलकर वह एक खुले विद्रोही बन गये और शाहगढ़ के राजा बखत बली के साथ मिलकर इस अचंल में क्रांति की वास्तविक शुरूआत होने से पहले ही युद्ध की तैयारी कर ली। जून के मध्य तक उन्होंने चंदेरी में अपना शासन स्थापित कर लिया था, वे अपना राजस्व उगाहते थे और यूरोपियन सिद्धांत पर बानपुर में एक तोप ढलाईघर भी बना लिया था, जिसमें बेहतरीन बोरिंग उपकरण लगे थे।

अप्रैल 1857 में, नानिकपुर के ठाकुर जुझार सिंह की चंदेरी राज्य में मृत्यु हो गयी। उनके धारण अधिकार को ब्रिटिश सरकार ने पुनः ग्रहण कर लिया और उनके उत्तराधिकारियों के साथ समझौता किया गया, लेकिन एक–तिहाई राज्य मर्दन सिंह को नहीं दिया गया, क्योंकि मूल समझौते में उन्हें विनिर्दिष्ट किया गया और उन्होंने जुझार सिंह के उत्तराधिकारी जवाहर सिंह को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया ताकि सरकार को उनका धारण अधिकार वापस करने के लिए मजबूर किया जा सकें। वह ब्रिटिश सरकार से इसलिए भी चिढ़े हुये थे क्योंकि उन्हें कतिपय ऐसे सम्मान नहीं दिये गये, जिनका वे स्वयं को हकदार मानते थे। इस प्रकार राजा की अनेक शिकायतें थीं, जिनका निराकरण नहीं हुआ था। उन्हें अंग्रेज सरकार उलट जाने की स्थिति में पूरा चंदेरी राज्य तथा अपने पूर्वजों का प्राचीन अधिकार वापस मिल जाने की उम्मीद थी। उन्होंने चंदेरी राज्य पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और मार्च 1858 में ह्युरोज के आगमन तक सागर जिले का उत्तरी भाग उनके कब्जे में रहा।

शाहगढ़ के राजा अर्जुन सिंह ने 1842 में बुंदेला व्रिदोह के दौरान खिमलासा में मदद के लिए 50 बंदूकधारी उपलब्ध कराये थे और अंग्रेजों को उपद्रवों के दमन में पूरे सहयोग का आश्वासन दिया था। उनकी 2 जून 1842 को मृत्यु हो गयी और उनके भतीजे बखत बली शाह उनके उत्तराधिकारी बने।

उन्होंने 22 दिसम्बर 1842 को बुन्देला विद्रोह के दौरान प्रमुख विद्रोही नेता, हीरापुर के हिरदेशाह को गिरफ्तार करवाया था जो व्रिदोहियों के लिये बहुत बड़ा आघात थी।

शाहगढ़ का भू–भाग, गढ़ाकोटा राज्य का बचा हुआ अंश था; इसका शेष भाग या तो सागर में पेंशवा के या सिंधिया के प्रतिनिधि के हाथों में चला गया। सन् 1818 में सागर का भू–भाग पेशवा बाजीराव द्वितीय के साथ हुई संधि के द्वारा अंग्रेजों के अंतर्गत आ गया। इस समय तक शाहगढ़ के प्रमुख को सिंधिया से गढ़ाकोटा का आधिपत्य मिल गया था और वह उन्हीं के पास था। अंग्रेजों ने जब पेशवा की ओर से गढ़ाकोटा का आधिपत्य लिया, तब उन्होंने शाहगढ़ राजा को वहाँ से बाहर कर दिया, जो शाहगढ़ जाकर रहने लगे। राजा बखतबली, जो विद्रोह के समय शाहगढ़ के शासक थे, ने फिर भी गढ़ाकोटा पर अपनी पैतृक सम्पत्ति के रूप में दावा किया, जिसे गैर–कानूनी तरीके से हड़प लिया गया था। उन्हें उम्मीद थी कि ब्रिटिश शासन समाप्त हो जाने पर यह उन्हें वापस मिल जाएगा। बानपुर के राजा मर्दन सिंह की तरह 1857 की क्रांति के दौरान गढ़ाकोटा पर अधिकार करके अपना सपना पूरा किया। फरवरी 1858 में हयुरोज द्वारा इस पर कब्जा किये जाने तक यह उन्हीं के पास रहा।

25 जून को मालथौन में 31वीं और 42वीं नेटिव इनफेन्ट्री के कुछ लोगों ने इस बात का आग्रह करते हुए खुला विद्रोह कर दिया कि बालबेहट के बंदियों को पुलिस की कस्टडी से उनके केम्प लाया जाए। ''बंदियों के केम्प में आगमन पर विद्रोहियो ने मेजर गौसेन को घेर लिया और बहुत उत्तेजित होकर जोर–जोर से माँग की कि उन्हें बंधन मुक्त कर दिया जाए, क्योंकि जिस समय उन्हें बंदी बनाया गया था, तब उन्होनें वायदा किया था कि उनके जीवन की रक्षा की जाएगी। यदि उन्हें सागर भेजा गया, तो उन्हें फाँसी पर लटका दिया जाएगा। मेजर गौसेन ने अन्य अधिकारियों के साथ विचार विमर्श कर बंदियों को छोड़ दिया। उसे सैनिकों का आचरण इतना उग्र लगा कि बात उसे मजबूरी में माननी ही पड़ी।

मालथौन में विद्रोह के बाद सागर जिले के उत्तरी भाग में डकैतों का प्रकोप हो गया, जो खुँखार बुंदेलों के हमले के कारण हुआ। ये लोग चंदेरी और शाहगढ़ से आये थे और नरहट तथा सागर जिले के अन्य ठाकुर इनसे आ मिले थे।मालथौन में सागर के सैनिकों के विद्रोह के बाद यह एक सामान्य आशंका पैदा हो गयी कि ''अगर सागर उठा खड़ा हुआ, तो दमोह और जबलपुर भी पीछे नहीं रहेगे। इस प्रकार इन क्षेत्रों में अंग्रेजो के बीच बहुत आशंका और खतरे का डर व्याप्त हो गया।

इसी बीच, बानपुर राजा द्वारा ललितपुर में बंदी बनाये गये यूरोपियनों को टेहरी भेज दिया गया जहाँ वे अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए जैसे–तैसे जान बचाकर पहुँचे। वहाँ ओरछा के युवा राजा के शिक्षक के प्रभाव के कारण उनके साथ अच्छा व्यवहार हुआ और बानपुर राजा के मुख्तियार, मोहम्मद अली खान से उनकी दोस्ती हो गयी। इसके बाद उन्हें सागर की तरफ भेजा गया, लेकिन उन्हें रास्ते में शाहगढ़ के राजा ने पकड़ कर कारावास में डाल दिया। उसने उन्हें तीन महीने तक जंगल में स्थित एक पुराने किले में बहुत बुरी स्थिति में बंद रखा। उन्हें खाने के लिए दिन में सिर्फ एक आना दिया जाता था। सितंबर 1857 में केप्टन मिलर के हमले का खतरा उत्पन्न होने पर राजा ने उन्हें सागर भेज दिया।

चौदह सितंबर को दोपहर 12 बजे ललितपुर के बंदी सागर पहुँचे। उनके नाम थे–लेफ्टिनेन्ट ए.सी.गोर्डन, कैप्टन कंजिनजेन्ट, केप्टन इर्विन, उसकी पत्नी और दो बच्चे, डॉ. ओ.ब्रिएन, मिस्टर बेरिस पेट्रोल, क्वार्टर मास्टर सार्जेन्ट केरोल और उसकी पत्नी।

जहाँ मालथौन में सागर रेजीमेन्ट में विद्रोह की भावना दिखाई दी, वहीं सागर में स्थिति से चिंता व्यक्त हो रही थी। ब्रिगेडियर सेज को सागर छावनी में सैनिकों की गतिविधियों पर संदेह था। उसने 27 जून को वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा की कि क्या किया जाना चाहिए। यह तय किया गया कि सागर शहर में स्थित पुराने किले को कब्जे में लिया जाए जिसका उपयोग छावनी के सिपाहियों द्वारा शस्त्रागार और गोलाबारुद के भंडार के रुप में किया जाता था और इसे अपना स्थान बना लिया था। इसके अलावा विद्रोह और उपद्रव फैलने की स्थिति में यूरोपियन और ईसाई लोगों के लिए इसे एक मात्र सुरक्षित स्थान माना गया। ''लिहाजा, यूरोपियन परिवारों के लिए आपूर्ति तथा रहने की तत्काल व्यवस्था की गयी। खजाने के बड़े हिस्से के साथ–साथ किले में स्थित बारुद और कारतूस को डिप्टी कमिश्नर कुचेरी से ले लिया गया। उसी दिन दोपहर में किले के अंदर सिपाही गार्ड को बिना किसी पूर्व सूचना दिये यूरोपियन तोपचियों ने कार्यमुक्त कर दिया। उसी वक्त यूरोपियन परिवारों को भी नोटिस दे दिया गया कि उनकी अगबानी के लिए किले में तैयारियाँ कर दी गयी है। लगभग सभी परिवारों ने उसी रात इस सुविधा का लाभ उठाया।''

इसके बाद सागर की पूरी सेना को मालथौन कूच करने को तैयार रहने का हुक्म भेजा गया। यह एक चाल थी। उन्तीस जून को जब बीकली गार्ड्स को सागर से कार्यमुक्त किया जा रहा था, तभी बचे हुए सभी यूरोपियन तोपचियों ने अपनी तोपों के साथ चुपके से किले में प्रवेश किया, जहाँ सभी यूरोपियन अफसर और ईसाई निवासी उनसे आकर मिल गये, जिन्हें पहले ही वहाँ अपनी कुछ सम्पत्ति लेकर जाने की चेतावनी दी गयी थी।

देशी सेना किले में इस प्रवेश पर आश्चर्य में पड़ गयी, लेकिन उसने कोई प्रतिरोध नहीं किया।इसके पश्चात ब्रिगेडियर सेज ने 31वीं और 42वीं नेटिव इनफेन्ट्री के देशी अफसरों तथा थर्ड इररेग्यूलर केवलरी को निर्देश दिया कि वे किले में उनके पास आयें। उनके आने पर उसने उन्हें बताया कि उनके द्वारा किये गये बफादारी के बायदे के बावजूद, मालथौन में प्रत्येक कोर के एक भाग ने विद्रोह कर दिया और अगर वे अपनी बफादारी

साबित करना चाहते है, तो उन्हें इसी वक्त उन लोगों को छोड़ देना चाहिए और अगर वे ऐसा नही करते है तो वह गद्दारो के साथ यूरोपियन अफसरों को नहीं रहने देगा।

कमिश्नर, मेजर डब्यू.सी. अर्सकाइन 29 जून 1857 को यूरोपियन अफसरों के बिना नेटिव इनफेन्ट्री रेजीमेन्टों को बाहर छोड़कर सागर के किले में प्रवेश के मामले में ब्रिगेडियर सेज के साथ सहमत नहीं था।उसकी राय थी कि इसका न सिर्फ सैनिकों पर, बल्कि नागोद, दमोह तथा जबलपुर के सैनिको के साथ–साथ देश के इस भाग के लोगों पर भी बुरा असर होगा।'' उसने 3 जुलाई, 1857 को ब्रिगेडियर सेज को लिखे अपने पत्र में भय तथा परिणाम को पूरी तरह व्यक्त किया। उस वक्त जबलपुर और दमोह में सब कुछ शांत था, जहाँ बंगाल की सेना पदस्थ थी। डिवीजन के अन्य सभी स्टेशनों पर मद्रास की सेनाएं थी। ''लेकिन सागर की सेना के आचरण और व्यवहार पर भविष्य में बहुत कुछ निर्भर करेगा।'' उसका डर एक जुलाई, 1857 को सही साबित हुआ, जब सागर की रेजीमेन्ट ने विद्रोह कर दिया।

गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया भी ब्रिगेडियर सेज के साथ सहमत नही थी और उसने 18 जुलाई, 1857 को ''देशी रेजीमेन्टों को उनके अफसरों के बिना बाहर छोड़कर सागर के किले में जाने की कार्यवाही'' पर उससे स्पष्टीकरण माँगा। तद्नुसार ब्रिगेडियर सेज ने असाधारण और अपनी तरह के अकेले मामले में अपनी कार्यवाही को लेकर सफाई दी।

उसने कहा कि ''मेरे पास इनफेन्ट्री (सिपाहियों) की दो तथा नेटिव केवलरी की एक रेजीमेन्ट थी, जबकि यूरोपियन गनर सिर्फ अढ़सठ थे। मेरे पास छावनी के एक तरफ किला, गोलाबारुद और बेटरिंग ट्रेन थी और दूसरी तरफ आर्टिलरी हिल थी; दोनो के बीच की दूरी सवा तीन मील थी। मैं दोनो को नहीं बचा सकता था; यदि मैं हिल को बचाता तो पूरी संभावना थी कि किला, गोलाबारुद और सागर जिले की चाबी खो बैठता। हिल पर मेरे पास कोई रसद नहीं थी और उसे रखने के लिए कोई जगह भी नही थी। साथ ही, पानी नीचे से लाना पड़ता। स्थितियाँ इस प्रकार थी– सिपाहियों के पास खजाना और किला था; वस्तुतः हम उन्ही की दया पर थे और तीनो रेजीमेन्टों के लोग हर रात मिलकर अपने इरादे पर खुलकर बात करते थे।'' इन परिस्थितयों पर उसने निर्णय लिया कि यूरोपियन लोग गोलाबारुद और खजाने सहित किले को अधिकार में ले और छावनी छोड़ दें।

निष्कर्षः–

यह क्रांति असफल रही लेकिन लोगों का मनोबल बढ़ा। अपने स्वतंत्रता हेतु मर मिटने के सुख की अनुभूति देश को हुई। इस क्रांति ने स्वतंत्रता संग्रम की नींव रखी। उसी की चरम परिणिति है कि हमारा देश स्वतंत्र हुआ। निष्कर्षतः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बुदेलखण्ड के सागर क्षेत्र का निःसंदेह अमूलय योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. फॉरेन सीक्रेट, कन्सलटेशन, 18 दिसम्बबर 1857, न. 225 नेशनल आकाईब्ज नई दिल्ली
2. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर, सागर (अंग्रेजी संस्करण) 1967, पृ. 66
3. मेजर डब्ल्यू.सी. एर्सकाइन; नेरेटिव ऑफ इवेन्ट्स अटेंडिग द आउटब्रेक ऑफ डिस्टरबेन्सेज एण्ड द रेस्टोरेशन ऑफ अथॉरिटी इन सागर एण्ड नर्मदा टेरीटरीज इन 1857–58, पैरा, 5, 6, 8
4. फॉरेन सीक्रेट, कन्सल्टेशन, 30 अक्टबर, 1857 न. 560, पैरा–2, नेशनल आर्काईब्ज नई दिल्ली
5. मेजर डब्ल्यू. सी. एर्सकाइन, पूर्वोक्त, पैरा–17–18
6. चार्ल्स बाल, द हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जिल्द (I) लंदन 1858, पृ. –436
7. मेजर डब्ल्यू.सी. एर्सकाईन, पूर्वोक्त, पैरा–21
8. द इम्पीरियल गजेटियर्स ऑफ इण्डिया, जिल्द ए 1908, पृ.–164
9. सी.यू. एचिसन, ए कलेक्शन ऑफ ट्रीटीज, इंगेजमेन्ट्स एण्ड सनदस, 1933, पृ. 7
10. जे.पी. मिश्र, द बुन्देला रिवेलियन, संदीप प्रकाशन, दिल्ली, 1982, पृ. 60
11. चार्ल्स बाल, पूर्वोक्त, पृ.–17
12. एस.बी., चौधरी, सिविल रिवेलियन इन इण्डियन म्यूटिनीज, कलकत्ता 1957, पृ. 206, 215, 218
13. द बुन्देला रिवेलियन, पूर्वोक्त, पृ. 93

14. सी.यू. एचीसन, पूर्वोक्त, पृ. 8
15. एस.एन सिन्हा, 'द रिवोल्ट ऑफ 1857 इन बुन्देलखण्ड, अनुज पब्लिकेशन लखनऊ, 1982, पृ. 50
16. फॉरेन सीक्रेट कन्सलटेशन, 18 दिसम्बर 1857, न. 235 नेशनल आर्काइब्ज, नई दिल्ली
17. चार्ल्स बाल, पूर्वोक्त, पृ.–563
18. मेजर डब्ल्यू.सी. एर्सकाईन, पूर्वोक्त, पैरा–24,
19. फॉरेन सीक्रेट कन्सलटेशन, 30 अक्टूबर 1857, न. 560, पैरा–14 नेशनल आर्काइब्ज, नई दिल्ली
20. मेजर डब्ल्यू.सी. एर्सकाईन, पूर्वोक्त, पैरा–43,
21. चार्ल्स बाल, पूर्वोक्त, पृ.–563
22. मेजर एर्सकाइन, पूर्वोक्त, पैरा–44
23. फॉरेन सीक्रेट कन्सलटेशन, 30 अक्टूबर 1857, न. 560, पैरा–17 नेशनल आर्काइब्ज, नई दिल्ली
24. मेजर एर्सकाइन, पैरा–48
25. फॉरेन सीक्रेट कन्सलटेशन, 31 जुलाई 1857, न.161, नेशनल आर्काइब्ज, नई दिल्ली
26. मेजर एर्सकाइन, पूर्वोक्त, पैरा–47, और 179
27. फॉरेन सीक्रेट कन्सलटेशन, 30 अक्टूबर 1857, न. 612, पैरा–12, नेशनल आर्काइब्ज, नई दिल्ली
28. मेजर एर्सकाइन, पूर्वोक्त, पैरा–49–51
29. फॉरेन सीक्रेट कन्सलटेशन, 31 जुलाई 1857, न. 342, पैरा–3, नेशनल आर्काइब्ज, नई दिल्ली
30. मेजर एर्सकाइन, पूर्वोक्त, पैरा–54–56
31. फॉरेन सीक्रेट कन्सलटेशन, 12 फरवरी 1858, न.109, पैरा–4, नेशनल आर्काइब्ज, नई दिल्ली